'जो सहता है वही रहता' कृति पर विदेशियों ने कहा

अफसोस! रसियन भाषा में नहीं है यह पुस्तक

सरदारशहर 19 नवज़्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में लगे अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में संभागी बने विदेशियों को जब जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन कृति जो सहता है वही रहता है के बारे में बताया गया तो सहसा सबके मुंह से निकला अफसोस! यह पुस्तक रसियन भाषा में नहीं है। रशियन अनुवादक मारिया ने जब उनको बताया कि आचार्य मह्मपज्ञ की यह 300वीं पुस्तक है और महाप्रयाण के 8 घण्टे पूर्व ही इस पर सज़्पादक मुनि जयंतकुमार ने चर्चा की थी तो सभी में पुस्तक देखने की होड़ मच गई। उन्होंने पुस्तक मस्तक पर लगाते हुए फोटो भी खिंचवाया। रूस, कुर्गन, यूक्रेन, कजाकिस्तान, अमेरिका, दुबई, भारत आदि देशों के इन शिविरार्थियों ने आचार्य महाप्रज्ञ को युग के महान संत बताते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत प्रेक्षाध्यान पॉवरफुल, अद्‌भुत एवं वैज्ञानिक पद्धति है।

आत्मा ही नहीं, नाम भी बदला

अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थियों में केवल व्यवहार और आत्मा में ही परिवर्तन नहीं आया, बल्कि उन्होंने अपने नाम भी बदलवा दिये। उन्होंने प्रेक्षा इन्टरनेशनल द्वारा आयोजित इस शिविर के समापन सत्र में आचार्य महाश्रमण से अपने मूल नाम की जगह नये आध्यात्मिक नाम लिये। आचार्य महाश्रमण ने किसी को धृति तो किसी को ऋषभ आदि नाम दिये सज़्मान सत्र में यूक्रेन के पॉप सिंगर अलेक्जेंडर ने सभी शिविरार्थियों की ओर से भावपूर्ण विदाई गीत प्रस्तुत कर सबको भाव विभोर कर दिया। प्रेक्षाध्यान इन्टरनेशनल के मैनेजिंग ट्रस्टी सुरेन्द्र कुमार चौरड़िया ने टिचिंग की परीक्षा देने वालों को मोमेंटो एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया एवं शिविर को सफल बनाने वाले सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। मुनि किशनलाल ने अपने विचार रखे।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि प्रेक्षाध्यान से आत्मा को उज्जवल बना सकते हैं, आदतों का परिष्कार कर सकते हैं। उन्होंने शिविर में किये गये अज़्यास को निरंतर करते रहने की आवश्यकता जताई। संचालन प्रेक्षाध्यान प्रभारी मुनि कुमार श्रमण ने किया। रशियन शिविरार्थियों ने आचार्य महाश्रमण से रूस पधारने की अर्ज की।

जीवन विज्ञान दिवस समारोह आयोजित

शिक्षा में हो जीवन विज्ञान का समावेश : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 19 नवज़्बर, 2010

जीवन विज्ञान आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा शिक्षा जगत में प्रदत्त महत्त्वपूर्ण अवधान है। इसको सर्वप्रथम शिक्षकों में होना जरूरी है। जब शिक्षकों में होगा तभी बच्चों में आसानी से जीवन विज्ञान आ सकता है। जीवन विज्ञान मूल्यों की शिक्षा है। इसके द्वारा नशा मुक्ति, ईमानदारी सदाचार आदि सज़्यक् गुणों की शिक्षा मिलती है।

उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ भवन में आयोजित जीवन विज्ञान दिवस समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। यह दिवस आचार्य महाप्रज्ञ के 'महाप्रज्ञ अलंकरण' के दिन सज़्पूर्ण देश में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि आलस्य व्यक्ति का महान शत्रु है और बालकों के ज्ञान अर्जन करने में बाधक ततव है। जीवन विज्ञान सज़्यक् कार्यों में शक्ति नियोजित करने के भाव भरता है।

जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने कहा कि जिस तरह से अभिभावक व्यवहार करेंगे वैसे ही बच्चों में संस्कारों का निर्माण होगा। समण सिद्धप्रज्ञ, गांधी विद्या मन्दिर के अध्यक्ष कनकमल दुगड़, चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री रतन दुगड़, संपतमल सुराणा ने अपने विचार रखे। मुनि महावीर कुमार ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

जीवन विज्ञान जागरिका रैली का आयोजन

जीवन विज्ञान दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित जीवन विज्ञान जागरिका रैली में बच्चे उमड़े। रैली शहर की विभिन्न स्कूलों से रवाना होकर मुज़्य मार्गों से होती हुई आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में तेरापंथ भवन पहुंची। तेरापंथ भवन में हजारों की संज़्या में उपस्थित बालक-बालिकाओं को आचार्य महाश्रमण ने प्रमाणिकता की प्रेरणा दी। मुनि किशनलाल एवं समण सिद्धप्रज्ञ ने प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर जीवन विज्ञान पर प्रतियोगिता आयोजित की गई।

मध्यान्ह में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान विषय पर एक प्रतियोगिता का आयोजन यिका गया। जिसमें निर्णायक की भूमिका डॉ. संजय दीक्षित व सुशील निर्वाण ने निभाई। प्रतियोगिता में कृष्णा पब्लिक स्कूल प्रथम, द्वितीय बाल उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं तृतीय शाकज़्भरी उच्च माध्यमिक विद्यालय विजेता रहे। पुरस्कार वितरण जीवन विज्ञान अकादमी के मंत्री संजय दीक्षित, सुशील निर्वाण ने किया। संपतराम सुराणा का विशेष योगदान रहा।